पहली बार चुने गए थे। सबसे अधिक मत वाला ... विचारक की है। ■ कैलाश शर्मा, स्वतंत्र टिप्पणीकार

अध्यक्ष भारत भूषण शर्मा और बैंक की उपाध्यक्ष भावना कटोच मौजूद थी।

की एक जन धाम, तू ही है तो महान' सुने। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेम चन्द बैरवा, शिक्षा मंत्री मदन ... के लिए बलिदान करने वाले शहीदों को याद किया।

संवैधानिक संस्थाएं अब कमजोर पड़ रही हैं : अश्विनी कुमार

नागरिकों के मूल अधिकारों का हनन हो रहा, सामाजिक ढांचे में गहरी खाई उत्पन्न हुई

सामाजिक ढांचे में गहरी खाई उत्पन्न हुई है, चरम सीमा पर असमानता

किताबों में मानव सम्मान, अस्मिता के बारे में संवैधानिक गारंटियों का जिक्र

एक शायर ने कहा है..

'नेक हुक्मरान बहुत जल्द ही वक्त आएगा, अब हमें सियासत के अंदाज परखने होंगे, अपनी फ़िक्र की क़सम, अपनी इबादत की क़सम, हमको तालीम के मयार बदलने होंगे' मेरी किताबों का यही फलसफा है।

शिवेश दत्त

जयपुर, 30 जनवरी : जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में आए देश के पूर्व कानून मन्त्री अश्विनी कुमार का मानना है कि पिछले कई सालों में राजनीतिक सत्ता और शासन संवैधानिक मर्यादाओं का पूरी तरह से पालन नहीं कर रहे हैं।

संवैधानिक संस्थाएं कमजोर पड़ रही हैं और देश के नागरिकों के मूल अधिकारों का हनन हो रहा है। हालांकि देश ने कई उपलब्धियां भी हासिल की हैं, लेकिन सामाजिक ढांचे में गहरी खाई उत्पन्न हुई है।

आर्थिक असमानता चरम सीमा पर है और आम नागरिक के मन में अपने भविष्य के बारे में भय की भावना है। सभी राजनीतिक दलों और केंद्र, राज्य सरकारों को मिलकर इन चुनौतियों का सामना करना होगा।

जयपुर : जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में प्रदर्शित अश्विनी कुमार की तीन पुस्तकें।

पंजाब केसरी से खास बातचीत में उन्होंने कहा कि देश के निर्माताओं के सपनों को साकार करने के लिए राजनीति में व्यक्तिगत कड़वाहट और आपसी द्वेष की भावना को खत्म करने की जरूरत है। देश के युवाओं को प्रेरित करने के लिए हमको राजनीतिक मापने बदलने होंगे। इस दौरान अपनी चर्चित किताब

'ए डेमोक्रेसी इन रीट्रीट' का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस किताब का विषय देश में धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की स्थिति और भविष्य है। यह किताब मेरे अनेक समाचार पत्रों में प्रकाशित आलेखों का संग्रह है। इन लेखों में देश में समय समय पर उभरती हुई संवैधानिक और राजनीतिक चुनौतियों का जिक्र है। यह संग्रह आने वाले समय में देश के बड़े मुद्दों पर मैं कहां खड़ा था, उसका प्रमाण होगी और इस किताब के माध्यम से देश के लोकतंत्र के लिए जो चुनौतियां हैं उनको समझने में मदद मिलेगी। अपनी किताबों के द्वारा मैं दलगत राजनीति से दूर रहते हुए भी देश के सार्वजनिक प्रक्रिया में योगदान देने की कोशिश कर रहा हूं।

जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के बारे में उनका मानना था कि इसके माध्यम से दुनिया भर में भारतीय साहित्य और साहित्यकारों को सम्मान और विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। इस साहित्य मेले में देश दुनिया के उन लोगों को आमंत्रित किया जाता है, जो अपनी लेखनी से साहित्य, समाज और विचारधारा पर अपनी गहरी छाप छोड़ते हैं।